



RAN - 2001000104030044

RAN-2001000104030044**S.Y.B.A. (Sem. IV) Examination October - 2023****Sanskrit Paper - X****वैदिकवाङ्मय (यजुर्वेद-(नियतांश) ईशावास्योपनिषद्)****Time: 2 Hours]****[Total Marks: 50****सूचना : / Instructions**

(१)

नीचे दशविल निशानीवाणी विगतो उत्तरवली पर अवश्य लपवी.
Fill up strictly the details of signs on your answer book

Name of the Examination:

S.Y.B.A. (Sem. IV)

Name of the Subject :

Sanskrit Paper - X वैदिकवाङ्मय (यजुर्वेद-(नियतांश) ईशावास्योपनिषद्)

Subject Code No.: 2001000104030044

Seat No.:

Student's Signature

प्र. १ टूंकमां ङवाब आपो. (गमे ते पांच)**(१०)**

- १) शुक्ल यजुर्वेदनी शाभाओना नाम आपो.
- २) यजुर्वेदनी द्रष्टिअे अश्वमेधमां अश्व शानुं प्रतीक छे? तेना द्वारा शुं सूचित थाय छे?
- ३) 'आ नो भद्रा क्रतवः यन्तु विश्वतः।' नो अर्थ स्पष्ट करो.
- ४) अदिति कोण छे?
- ५) विनोबाभावेअे 'संभूति' - 'असंभूति' कयो अर्थ आप्यो छे?
- ६) 'ईशावास्योपनिषद्' मुंजब विद्यानी उपासना करनारनी केवी गति थाय?
- ७) कर्मयोगी शा कारणे कर्मथी वेपाता नथी?

प्र. २ (अ) मंत्रो सानुवाद समजावो. (गमे ते अेक)**(०५)**

- (१) स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥२५-१९॥
- (२) यस्मिन्नृचः साम यजूषि यस्मिन्प्रतिष्ठता रथनाभाविवाराः।
यस्मिंश्चितं सर्वमोतः प्रजानान्तन्मे मनःशिवसंकल्पमस्तु॥३४-५॥

RAN-2001000104030044]

[1]

[P.T.O.]

P0515

- प्र. २ (ब) मंत्रो सानुवाद्द समञ्जसो. (गमे ते बे) (०८)
- (१) ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किं च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्विद् धनम्॥१॥
- (२) यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्येवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते॥६॥
- (३) हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय द्ष्ट्ये॥१५॥
- (४) अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्। विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनः भूयिष्ठां ते नमः - उक्ति विधेम॥१८॥

- प्र. ३ टूंक नोँध लभो. (गमे ते बे) (१३)
- (१) वैदिक देवतावाद
(२) यजुर्वेदनो अवन संदेश
(३) यजुर्वेदना शिवसंकल्प मंत्रो
(४) यजुर्वेदमां वर्णित विषय

- प्र. ४ टूंक नोँध लभो. (गमे ते बे) (१४)
- (१) 'ईशावास्योपनिषद्' नो शांतिपाठ
(२) 'ईशावास्योपनिषद्' मुञ्ज अवन पद्धति
(३) उपनिषद् शब्दना विविध अर्थघटनो
(४) विद्या-अविद्या।